महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

'भारतीय साहित्य को कुबेरनाथ राय का अवदान' विषय पर हुआ परिसंवाद
साहित्य अकादमी दिल्ली एवं हिंदी विश्व विद्यालय का संयुक्त आयोजन

वर्धा, 19 मार्च 2026 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयएवं साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में 'भारतीय साहित्य को कुबेरनाथ राय का अवदान' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन ग़ालिब सभागार में बुधवार, 18 मार्च को किया गया। त्रिसत्रीय परिसंवाद के प्रथम एवं उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा नेकी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात लेखक

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय उपस्थित रहे। सत्र का स्वागत और आरम्भिक वक्तव्य गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के एसोशिएटप्रोफेसर डॉ. मनोज कुमार राय ने दिया तथा विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ मनोज कुमार राय ने श्री कुबेरनाथ राय के जीवन एवं उनके लेखन कार्यों का संक्षिप्त परिचय देते हुए परिसंवाद को एक दिशा प्रदान की एवं यह भी बताया कि कैसे इतने महान लेखक और निबंधकार को इतिहास में उनके यथायोग्य स्थान से दूर रखा गया। श्री राय ने श्री कुबेरनाथ राय को उद्धृत करते हुए बताया कि भारतीयता किसी एक की नहीं बल्कि यह एक संयुक्ताधिकार है।

मुख्य अतिथि नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने कुबेरनाथ राय पर सारगर्भित विचार रखते हुए कुबेर नाथ राय की तुलना ऐसे महामानव से की जिसकी नियति ही एकांत थी। उनके अनुसार, कुबेरनाथ राय के निबंध ऐसे गीत हैं जो आलोकित भी हैं और संगीतमय भी। श्री उपाध्याय के अनुसार सौंदर्य के दो प्रकार होते हैं एक प्राकृतिक एवं दूसरा मानव रचित और यही मानव रचित सौंदर्य का बोध ललित निबंध के रूप में हमें कुबेरनाथ राय की लेखनी में मिलता है।

कार्यक्रम की अध्यक्ष कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा ने कुबेरनाथ राय के भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान को याद करते हुए बताया कि कुबेरनाथ राय के लेखन कार्यों में सदैव ही भारत बोध की बात होती है। ऐसे अद्वितीय लेखक और भारतीय निधि को पाठ्यक्रम में अवश्य ही स्थान मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत को गढ़ने वाले सभी तत्व कुबेरनाथ राय के निबंधों में परिलक्षित होते है।

परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वरुण कुमार ने की तथा डॉ. राकेश कुमार मिश्र, प्रो. रामानुज अस्थाना एवं प्रो. अवधेश कुमार ने आलेख पाठ प्रस्तुत किया। वरुण कुमार ने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री कुबेर के निबंधों पर एक विस्तृत दृष्टि प्रस्तुत करते हुए उन्हें और अधिक जानने, पढ़ने और समझने की अपील की।

कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा ने की। इस सत्र में प्रोफेसर हनुमानप्रसाद शुक्ल एवं डॉ मनोज राय ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। प्रोफेसर शुक्ल ने कुबेर की लेखनशैली पर बात करते हुए बताया कि वह सदैव ही एक विकसनशील लेखक रहे हैं और समय के साथ उनकी लेखन शैली का विकास होता चला गया है। इसी तरह उन्होंने अपने व्यक्तित्व को भी निरंतर मांजा है। कार्यक्रम के

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

संयोजक डॉ. मनोज कुमार राय ने अपने वक्तव्य में कुबेरनाथ राय की प्रशंसा करते हुए बताया कि जो लेखन कार्य उन्होंने अपनी आठवीं कक्षा में 'साहित्य में मेरा वादा' नामक निबंध से शुरू किया वह जीवन भर इसी वेग और निरंतरता से और अधिक सार्थक एवं मूल्यवान होता चला गया।

कुलपति प्रोफेसर कुमुद शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक साहित्यकार को सदैव ही लिखते रहना चाहिए। कुबेरनाथ राय का साहित्य वैदिक साहित्य की ही निरंतरता है एवं उनके निबंध हिंदी भाषा के लिए एक संजीवनी की तरह है। सत्र के अंत में गांधी शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

कुबेरनाथ राय यांचे भारतीय साहित्यातील योगदान विषयावर परिसंवादाचे आयोजन

साहित्य अकादमी, दिल्ली व हिंदी विश्वविद्यालय यांचे संयुक्त आयोजन

वर्धा, १९ मार्च २०२६ : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदीविश्वविद्यालय व साहित्य अकादमी यांच्या संयुक्त विद्यमाने 'भारतीय साहित्याला कुबेरनाथ राय यांचे योगदान' या विषयावर एकदिवसीय परिसंवादाचे आयोजन गालिब सभागृहात बुधवार, १८ मार्च रोजी करण्यात आले. त्रिसत्रीय परिसंवादाच्या उद्घाटन सत्राची अध्यक्षता कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांनी केली. या वेळी मुख्य अतिथी म्हणून नर्मदा प्रसाद उपाध्याय उपस्थित होते. स्वागत आणि प्रारंभिक भाषण गांधी व शांती अध्ययन विभागाचे असोशिएट प्रोफेसर डॉ. मनोज कुमार राय यांनी केले, तर विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार मिश्र यांनी आभार मानले.

बीज भाषणात डॉ. मनोज कुमार राय यांनी कुबेरनाथ राय यांच्या जीवनाचा आणि त्यांच्या लेखनकार्याचा संक्षिप्त परिचय देत परिसंवादाला दिशा दिली. त्यांनी हेही नमूद केले की इतक्या महान लेखक आणि निबंधकाराला इतिहासात त्यांच्या योग्य स्थानापासून दूर ठेवण्यात आले.

मुख्य अतिथी नर्मदा प्रसाद उपाध्याय यांनी कुबेरनाथ राय यांच्याविषयी सारगर्भित विचार मांडले आणि त्यांची तुलना अशा महामानवासोबत केली ज्याचे नशीबच एकांत होते. त्यांच्या मते, कुबेरनाथ राय यांचे निबंध हे असे गीत आहेत जे प्रकाशमान आणि संगीतमय आहेत.

कार्यक्रमाच्या अध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा यांनी कुबेरनाथ राय यांच्या भारतीय साहित्यातील अतुलनीय योगदानाची आठवण करून देत सांगितले की त्यांच्या लेखनात सदैव भारतबोध आढळतो. त्यांच्या मते, अशा अद्वितीय लेखकाला अभ्यासक्रमात स्थान मिळालेच पाहिजे. भारत घडविणारे सर्व घटक त्यांच्या निबंधांत प्रतिबिंबित होतात असेही त्या म्हणाल्या.

परिसंवादाच्या दुसऱ्या सत्राची अध्यक्षता वरुण कुमार यांनी केली. या सत्रात डॉ. राकेश कुमार मिश्र, प्रो. रामानुज अस्थाना आणि प्रो. अवधेश कुमार यांनी आपले संशोधन लेख सादर केले. अध्यक्षीय भाषणात वरुण कुमार यांनी कुबेरनाथराय यांच्या निबंधांचा सखोल आढावा घेत त्यांना अधिक जाणून घेण्याचे, वाचण्याचे आणि समजून घेण्याचे आवाहन केले.

समारोप सत्राची अध्यक्षता प्रो. कुमुद शर्मा यांनी केली. या सत्रात प्रा. हनुमानप्रसाद शुक्लव डॉ. मनोज राय यांनी आपले विचार मांडले. अध्यक्षीय भाषणात प्रो. कुमुद शर्मा यांनी सांगितले की साहित्यिकाने सतत लिहित राहिले पाहिजे. त्यांच्या मते, कुबेरनाथ राय यांचे साहित्य वैदिक परंपरेचेच पुढील रूप आहे आणि त्यांचे निबंध हिंदी भाषेसाठी संजीवनीसारखे आहेत.

सत्राच्या शेवटी गांधी शांतता अध्ययन विभागाचे अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार मिश्रा यांनी आभार प्रदर्शन केले. या कार्यक्रमास मोठ्या संख्येने शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.